प्रेरितों के काम की पुस्तक की एक रूपरेखा

(अध्याय 1–28)

I. यरूशलेम में गवाहियां (1–7)।

(क) अध्याय 1 : प्रतीक्षा का समय।

1. प्रारम्भिक कथन (पद 1, 2)।
2. स्वर्गारोहण (पद 3–11)।
3. यरूशलेम में प्रतीक्षा करना (पद 12–14)।
4. यहूदा के स्थान पर नियुक्ति (पद 15–26)।

(ख) अध्याय 2 :कलीसिया की स्थापना होती है।

1. सामर्थ आती है (पद 1–13)।
2. सुसमाचार का प्रथम प्रवचन (पद 14–36)।
3. आरम्भिक मसीही (पद 37–41)।
4. आरम्भिक कलीसिया के बारे में संक्षिप्त विवरण (पद 42–47)।

(ग) अध्याय 3 : सुसमाचार का प्रचार होता है।

1. एक लंगड़े आदमी को चंगाई मिलना (पद 1–11)।
2. एक अधूरा प्रवचन (पद 12–26)।

(घ) अध्याय 4 : अत्याचार का आरम्भ।

1. पतरस और यूहन्ना गिरफ़्तार होते हैं (पद 1–31)।
2. सब कुछ साझे का (पद 32–37)।

(ङ) अध्याय 5 : कलीसिया का अनुशासन - और अधिक सताव।

1. कलीसिया के अनुशासन का पहला मामला (पद 1–11)।
2. प्रसिद्धि बढ़ती है (पद 12–16)।
3. और अधिक सताव (पद 17–42)।

(च) अध्याय 6 : प्रथम ''डीकनों (सेवकों)'' का चयन।

1. कलीसिया की एकता को खतरा होता है; सात सेवक चुने जाते हैं (पद 1–7)।
2. इनमें से एक सेवक (स्तिफनुस) गिरफ़्तार हो जाता है (पद 8–15)।

(छ) अध्याय 7 : प्रथम मसीही शहीद।

1. स्तिफनुस द्वारा सफाई में यहूदी इतिहास को दोहराना (पद 1–53)।
2. स्तिफनुस की मृत्यु (पद 54–60)।

II. फलस्तीन के शेष भागों में गवाहियां (8–12)।

(क) अध्याय 8 : कलीसिया बिखर जाती है ।

1. शाऊल कलीसिया को सताता है (पद 1-4)।
2. फिलिप्पुस सामरिया में जाता है (पद 5-25)।
3. कूश देश के एक मनुष्य का मनपरिवर्तन (पद 26-40)।

(ख) अध्याय 9 : सताने वाले का मनपरिवर्तन और पतरस की यात्राएं।

1. शाऊल का मनपरिवर्तन (पद 1-8)।
2. शाऊल का आरम्भिक काम (पद 9-31)।
3. पतरस की अन्य यात्राएं (पद 32-43)।

(ग) अध्याय 10 : सुसमाचार का प्रचार अन्यजातियों में होता है (1)।

1. एक गैरयहूदी (कुरनेलियुस) पतरस को बुलाता है (पद 1-8)।
2. पतरस का दर्शन (पद 9-23)।
3. कुरनेलियुस और उसके घराने का मनपरिवर्तन (पद 24-48)।

(घ) अध्याय 11 : सुसमाचार का प्रचार अन्यजातियों में होता है (2)।

1. पतरस आलोचकों को समझाता है (पद 1-18)।
2. अन्यजातियों में और प्रचार (पद 19-26)।
3. गैरयहूदी लोग यहूदियों की सहायता करते हैं (पद 27-30)।

(ङ) अध्याय 12 : प्रार्थना की सामर्थ।

1. प्रथम प्रेरित (याकूब) को हेरोदेस मरवा देता है (पद 1,2)।
2. पतरस को हेरोदेस कैद कर लेता है (पद 3-5)।
3. परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देता है (पद 6-17)।
4. हेरोदेस की मृत्यु (पद 18-24)।
5. बरनबास और शाऊल सीरिया के अन्ताकिया में लौटते हैं (पद 25)।

III. पृथ्वी के छोर तक गवाहियां (13-28)।

(क) पौलुस की मिशनरी यात्राएं (13-21)।

1. अध्याय 13: पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा (1)।
   - क बरनबास और शाऊल का चयन पवित्र आत्मा के द्वारा (पद 1-3)।
   - ख अन्ताकिया में सीरिया से कुप्रुस की ओर (पद 4)।
   - ग कुप्रुस में: सलमीस और पाफुस में (पद 5-12)।
   - घ पिरगा में (पद 13)।
   - ङ पिसिदिया के अन्ताकिया में (पद 14-52)।
2. अध्याय 14: पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा (2)।
   - क इकुनियुम में (पद 1-6)।
   - ख लुस्त्रा में (पद 7-20)।
   - ग दिरबे में (पद 21)।
   - घ वापसी यात्रा (पद 21-28)।

3. अध्याय 15: यरूशलेम में एक कॉन्फ्रेंस और पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा (1)।
    - क अन्यजाति मसीहियों पर मूसा की व्यवस्था थोपने के संबंध में झगड़ा (पद 1, 2)।
    - ख यरूशलेम में एक कॉन्फ्रेंस; एक पत्र लिखा जाता है (पद 3–29)।
    - ग पौलुस, बरनबास, और अन्य जब पत्र लेकर सीरिया के अन्ताकिया में जाते हैं (पद 30–35)।
    - घ पहली यात्रा में स्थापित कलीसियाओं को फिर से मिलने की इच्छा; पौलुस और बरनबास के बीच असहमति (पद 36–39)।
    - ङ पौलुस और सीलास पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा आरम्भ करते हैं (पद 40, 41)।
4. अध्याय 16: पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा (2)।
    - क एक और सहयात्री (तीमुथियुस) (पद 1–3)।
    - ख "नगर-नगर जाते हुए" (पद 4, 5)।
    - ग त्रोआस में: "मकिदूनिया से पुकार" (पद 6–10)।
    - घ मकिदुनिया को जाना (पद 11, 12)।
    - ङ फिलिप्पी में: लूदिया और उसके घराने का मनपरिवर्तन (पद 13–15)।
    - च फिलिप्पी में: भूतों से ग्रस्त एक लड़की का चंगा होना और कैद (पद 16–24)।
    - छ फिलिप्पी में: दारोगे और उसके घराने का मनपरिवर्तन (पद 25–34)।
    - ज फिलिप्पी में: जेल से छूटना (पद 35–40)।
5. अध्याय 17: पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा (3)।
    - क थिस्सलुनीके में (पद 1–10)।
    - ख बिरीया में: "भले" लोग (पद 11–15)।
    - ग अथेने में: पौलुस का जी जल गया (पद 16–21)।
    - घ अथेने में: अरियुपगुस में प्रवचन (मार्स की पहाड़ी) (पद 22–34)।
6. अध्याय 18: पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा (4) और पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा (1)।
    - क डेढ़ वर्ष तक कुरिन्थुस में (पद 1–17)।
    - ख पौलुस सूरिया में अन्ताकिया को लौटता है – इफिसुस में ठहरकर (पद 18–22)।
    - ग तीसरी मिशनरी यात्रा का आरम्भ (पद 23)।
    - घ एक वाक्पटु प्रचारक (अपुल्लोस) का परिचय (पद 24–28)।

7. अध्याय 19: पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा (2)।
   - क इफिसुस में: बारह चेलों को पुन: डुबोया जाता है (पद 1-7)।
   - ख इफिसुस में: पौलुस की सेवकाई और योजनाएं (पद 8-22)।
   - ग इफिसुस में: विरोध करने वाले (पद 23-41)।
8. अध्याय 20: पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा (3)।
   - क मकिदुनिया और यूनान, वापस मकिदुनिया और फिर त्रोआस में जाना (पद 1-6)।
   - ख त्रोआस में: प्रभु के दिन इकट्ठे होना (पद 7-12)।
   - ग यरूशलेम के मार्ग पर (पद 13-16)।
   - घ मीलेतुस में: इफिसुस के प्राचीनों से गम्भीर बातचीत (पद 17-38)।
9. अध्याय 21: पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा (4) और यरूशलेम में पौलुस की गिरफ़्तारी।
   - क यरूशलेम की ओर - सूर, पतुलिमयिस और कैसरिया में रुकते हुए (पद 1-17)।
   - ख पौलुस आलोचना से बचने की कोशिश करता है (पद 18-26)।
   - ग पौलुस गिरफ़्तार होता है (पद 27-36)।
   - घ अपना पक्ष रखने का अवसर (पद 37-40)।

(ख) पौलुस के कारावास और रोम की यात्रा (पद 22-28)।

1. अध्याय 22: यरूशलेम में पौलुस का कारावास (1)।
   - क पौलुस का बचाव पक्ष (पद 1-22)।
   - ख उलझन में पड़ा सूबेदार (पद 23-30)।
2. अध्याय 23: यरूशलेम में पौलुस का कारावास (2) और कैसरिया में पौलुस का बन्दी होना (1)।
   - क महासभा के सामने पौलुस (पद 1-10)।
   - ख उत्साहित करने वाला दर्शन (पद 11)।
   - ग खूनी षड्यंत्र का पता चलना (पद 12-22)।
   - घ पौलुस को कैसरिया में ले जाया जाना (पद 23-35)।
3. अध्याय 24: कैसरिया में पौलुस का बन्दी होना (2)।
   - क फेलिक्स के आगे पेशी (पद 1-23)।
   - ख "अवसर पाकर": फेलिक्स का अपरिवर्तित रहना (पद 24-27)।
4. अध्याय 25: कैसरिया में पौलुस का बन्दी होना (3)।
   - क पौलुस, फेलिक्स के सामने पेशी के समय कैसर की दोहाई देता है (पद 1-12)।
   - ख दो लोग कैसरिया में आते हैं, सुसमाचार का प्रचार करने का एक और अवसर (पद 13-27)।

5. अध्याय 26: कैसरिया में पौलुस का बन्दी होना (4)।
    - क राजा अग्रिप्पा के सामने अपने बचाव में पौलुस बताता है कि वह क्यों बदला (पद 1-27)।
    - ख ‘‘थोड़े ही समझाने से ... ?’’ राजा अग्रिप्पा का परिवर्तित न होना (पद 28, 29)।
    - ग अगला ठहराव: रोम (पद 30-32)।
6. अध्याय 27: पौलुस की रोम यात्रा (1)।
    - क यात्रा आरम्भ होती है (पद 1-8)।
    - ख पौलुस द्वारा चेतावनी (पद 9-12)।
    - ग समुद्र में जोखिम (पद 13-44)।
7. अध्याय 28: पौलुस की रोम यात्रा (2)
    - क एक टापू (मालटा) पर जोखिम (पद 1-10)।
    - ख यात्रा जारी; रोम में आगमन (पद 11-16)।
    - ग मुकद्दमे का इन्तज़ार (पद 17-31)।

सारांश

प्रेरितों के काम की पुस्तक विजय के एक नोट के साथ समाप्त होती है: ‘‘और वह [पौलुस] पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और बिना रोक-टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा’’ (प्रेरितों 28:30, 31)!